



METRO RAILWAY, KOLKATA

INDIA'S FIRST METRO

মেট্রো রেলওয়ে আপনাকে স্বাগত জানাচ্ছে !

কলকাতা - আনন্দের শহর, ভারতের সাংস্কৃতিক রাজধানী এবং লক্ষ লক্ষ মানুষের বাসস্থান। শহর আয়তনে বাড়লেও কলকাতার সংরক্ষিত ঐতিহ্য আজও মানুষের আবেগ।

শিল্পের সমৃদ্ধির সাথে সাথে শহর কলকাতা তার সীমিত রাস্তার কারণে সংকুচিত হয়ে পড়ে। চারদিকে উপচে পড়া যানজটের কারণে শহরের ব্যবসা বাণিজ্য বাধাগ্রস্ত হতে শুরু করে। আর উপায় না পেয়ে সরকার অবশেষে স্বাধীনতার পরেই মেট্রো রেল চালানোর ভাবনা শুরু করে। ঠিক হয়, প্রথম পর্যায় দমদম থেকে টালিগঞ্জের মধ্যে মেট্রো রেল চালানো হবে। কিন্তু কলকাতায় মেট্রোরেলের ভাবনা কিন্তু নতুন নয়! বাস্তবায়িত না হলেও 1921 সালে সেই ব্রিটিশ আমলে প্রথম কলকাতায় মেট্রোরেল চালানোর ভাবনা The Pioneer-এ প্রকাশিত হয়। রাস্তায় যানজট বাড়তে থাকায় 1969 সালে ভারতীয় রেলের অধীনে Metropolitan Transport Project অনুমোদন করা হয়। দেশের বাকি শহরগুলি যখন মেট্রোর কথা স্বপ্নেও ভাবতে পারতো না, কলকাতায় বিশ্বমানের পরিষেবা দেওয়ার জন্য ভারতীয় রেল গর্বের করে মেট্রো রেলওয়েকে বাস্তবায়ন করেছিল।



স্বপ্ন উদ্ভবের হলেও তখন কলকাতার মতন ঘনবসতিপূর্ণ শহরে মেট্রোরেল বানানো সহজ ছিলনা। আর্থিক সংকট এবং প্রযুক্তিগত ভাবে ভারত তখনও পিছিয়ে থাকায় আমাদের অনেক পরিকল্পনা করে মেট্রোরেলের কাজ শুরু করতে হয়। অবশেষে German, Hungarian এবং Russian বন্ধুদের সাহায্যে কলকাতায় জোর কদমে শুরু হয় মেট্রোর সুদৃষ্টি তৈরির কাজ। সরকারের কাছে তখনও মেট্রো সংক্রান্ত কোনো standard না থাকায় পরিকল্পনা করে আপনাদের নর্থ - সাউথ মেট্রো বানানো সময়সাপেক্ষ হয়ে পরে।

অবশেষে, সব বাধা বিপত্তির পার করে কাজ সম্পূর্ণ হলো। ভারতীয় সংস্থা BHEL এবং NGEF এর সাহায্যে চেন্নাইয়ের ICF-এ তৈরি হলো মেট্রো রেলের কোচ। মানুষের আশীর্বাদে অবশেষে ১৯৮৪ সালের ২৪ অক্টোবর ভবানীপুর থেকে এসপ্লানেডের মধ্যে চালু হলো কলকাতা মেট্রো রেল।



৩৭ বছর আগে আজকের দিনে যখন এসপ্লানেড স্টেশনে মেট্রো প্রথম প্রবেশ করে তার স্বয়ংক্রিয় দরজাগুলি খোলে, যাত্রীদের চোখে তখন বিস্ময়! কয়লার ইঞ্জিনের আমলে এ কী দেখছে তারা? পাতালরেল তো নিউ ইয়র্ক - লন্ডনের মতন শহরে আছে, কলকাতাতেও এসব সম্ভব?

শীঘ্রই কলকাতা মেট্রো শহরের গর্ব হয়ে উঠল! আমরাও পরিষেবা দিতে দিতে টালিগঞ্জ থেকে দমদম পৌঁছে গেলাম! মানুষ বুঝে গেল যে ট্রাম, বাস, ট্যাক্সি এবং অন্যান্য যানবাহনের থেকে পাতাল-ভ্রমণ অনেক ভালো। কাজেই যত দিন গেল, মেট্রোয় ভিড় বেড়েই চললো।

শুরুতে মাত্র ৪টি কোচ নিয়ে শুরু করলেও শীঘ্রই তা বাড়িয়ে ৮টি কোচ করা হলো। লক্ষ লক্ষ যাত্রীর আশা - ভরসা হয়ে ওঠায় মেট্রো রেলওয়ে দেশের সেরা প্রকল্পের তালিকায় স্থান পেল। আমাদের সাফল্যে মুম্বাই থেকে দিল্লি, চেন্নাই থেকে ব্যাঙ্গালোর, সব শহরেই মেট্রোর ভাবনা আরম্ভ করলো।

বাড়তে বাড়তে তখন আমরা দমদম থেকে নিউ গড়িয়া পৌঁছে গেছি। আমাদের হাতে রেকের সংখ্যা ১৮ হলেও তা তখন পুরনো এবং অপরিপাক্য। অবশেষে কবি সুভাষ মেট্রো স্টেশন চালু হওয়ায় ৭ অক্টোবর ২০১০-এ আমাদের প্রথম দুটি বাতানুকুল রেক যাত্রী পরিষেবা শুরু করে।

কিন্তু সব রেক এসি না হওয়ায় যাত্রীরা নন এসি মেট্রো পেলেই তা ছেড়ে দিতে আরম্ভ করে! কাজেই এসি মেট্রোতে এত বেশি ভিড় হয় যে ঠিক ভাবে দরজাই বন্ধ হয়না!

কিন্তু আর নয়! অবশেষে সেই দিনটি চলেই এলো! মেট্রো রেলওয়ের তরফে আমরা গর্বের সঙ্গে জানাচ্ছি যে নন এসি মেট্রো পরিষেবা আজ থেকে সম্পূর্ণভাবে বন্ধ করে দেওয়া হচ্ছে। হাতে পর্যাাপ্ত এসি রেক থাকায় আজকের পরে যাত্রী পরিষেবায় আর কোনোদিন কোনো নন এসি মেট্রো চালানো হবেনা! সুড়ঙ্গের মধ্যে নন এসি মেট্রোর সেই গর্জন, ভেতরের সেই সঁতসঁতে আবহাওয়া আর কখনো আপনাদের সহ্য করতে হবেনা! আপনার প্রিয় নন এসি মেট্রোর দরজা আর কখনো খুলবেনা, আর কখনো মেট্রোর মধ্যে সেই পাখা চলবেনা! সব এখন ইতিহাসের পাতায়!

উত্তরে বারাসাত, দক্ষিণে জোকা, পূর্বে নিউ টাউন, পশ্চিমে হাওড়া ময়দান; ভবিষ্যতে যখন গোটা শহরে মেট্রোরেল জালের মতন ছড়াবে, আধুনিক প্রযুক্তির সেই এসি রেক হবে আগের চেয়েও বেশি আরামদায়ক। মাত্র কয়েক মিনিটের ব্যবধানে পৌঁছনো যাবে শহরের যে কোন প্রান্তে! গঙ্গার নিচে দেশের প্রথম underwater মেট্রো, বিমানবন্দরে বিশাল আকৃতির মেট্রো স্টেশন, হাওড়া স্টেশনের নিচে দেশের সবচেয়ে গভীর মেট্রো স্টেশন, খুব শীঘ্রই আমরা এসব কলকাতার সেবায় অর্পণ করব।

হাওড়া থেকে শিয়ালদহ, কালীঘাট থেকে দক্ষিণেশ্বর, ইকো পার্ক থেকে ভিক্টোরিয়া, বারাসাত থেকে জোকা, ভবিষ্যতে আপনার প্রিয় মেট্রোরেল শহরের প্রতিটি কোণায় পৌঁছে যাবে!

"দেশের প্রথম, কলকাতার গর্ব — মেট্রো রেলওয়ে কলকাতা! সর্বদা মানুষের সেবায়! "

मेट्रो रेलवे में आपका स्वागत है।

कोलकाता - खुशियों का शहर और देश की सांस्कृतिक राजधानी। एक ऐसा शहर, जिसमें लाखों लोगों का आशियाना है, जो ब्रिटिश राज की गाथा सुनाती है, पुरातन और नवीनता का अद्भुत सम्मिश्रण लिए हुए अनूठा शहर है कोलकाता.

जैसे-जैसे इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बढ़ता गया, कोलकाता अपने सीमित सड़क स्थान से संकुचित होता गया। चारों ओर से यातायात के अतिप्रवाह के साथ शहर अपनी संकीर्ण सड़कों के कारण मर रहा था। आखिरकार शहर को गतिमान करने के लिए हमने भारत की पहली मेट्रो रेल का निर्माण कोलकाता में करने का फैसला किया ! जैसा कि 'द पायोनियर' में देखा जा सकता है, कोलकाता में मेट्रो रेलवे की संकल्पना 1921 में ब्रिटिश राज द्वारा की गई थी। राजनीतिक एवं आर्थिक उतार-चढ़ाव के बाद सन् 1969 में रेलवे मंत्रालय के तहत मेट्रोपोलिटन ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट के माध्यम से कोलकाता मेट्रो को पुनर्जीवित किया गया।



उस वक्त जब देश के दूसरे शहर मेट्रो रेल की कल्पना भी नहीं कर सकते थे, कोलकाता को विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान करने के लिए रेलवे मंत्रालय के तहत मेट्रो रेलवे कोलकाता का गठन किया गया था।

उस दौरान भारत में इस तरह की परियोजना का निर्माण बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य था। आर्थिक संकट और टेक्नोलॉजी के कमी के कारण हमें उत्तर-दक्षिण मेट्रो के निर्माण में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा, लेकिन अपने जर्मन, हंगेरियन और रूसी दोस्तों की मदद से हमने इसे हकीकत में बदलने के लिए मेट्रो रेल का निर्माण शुरू किया। तब सरकार द्वारा मेट्रो की कोई प्रमाणिकता न बनने के कारण अपने दम पर मेट्रो का निर्माण करना आसान नहीं था। इसमें कुछ ज्यादा समय लगा, लेकिन हमने अपने दम पर कोलकाता को एक बढ़िया भेंट दिया।

आखिरकार संघर्ष और संयम के साथ काम पूरा हुआ। भेल और एनजीईएफ की मदद से भारत में ही चेन्नई में आईसीएफ द्वारा मेट्रो ट्रेन का निर्माण किया गया इस प्रकार जनता-जनार्दन के आशीर्वाद से 24 अक्टूबर 1984 को कोलकाता मेट्रो को राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया गया। 37 साल पहले आज के दिन हमारे अत्याधुनिक मेट्रो ट्रेन एस्प्लानेड पहुँची और अपने स्लाइडिंग दरवाजे खोलकर यात्रियों का स्वागत कर उन्हें चकित कर दिया। जब देश के बाकी शहरों में स्टीम इंजन महशूर था, जब लोगों ने केवल लंदन अंडरग्राउंड मेट्रो के बारे में सुना था तब कोलकाता की पावन भूमि पर मेट्रो ने अपनी यात्रा शुरू की। हमने जल्दी ही “भारत का पहला, कोलकाता का गौरव” का ताज हासिल कर लिया।

इसके तुरंत बाद मेट्रो को और बेहतर बनाने का प्रयास किया गया। जैसे ही टालीगंज से दमदम तक मेट्रो का विस्तार हुआ, हमने पूरे शहर के आवागमन का भार ले लिया। जल्द ही हमारी मेट्रो सेवाएं ट्राम, बस और टैक्सियों की तुलना में बेहतर साबित हुई। हमारी नॉन-एसी मेट्रो टनल के अंदर शोर तो बहुत करती थी, लेकिन जैसे-जैसे हमारी मेट्रो ट्रेन सुरंग से गुजरती गई

लोगों ने अपने जीवन को आसान बनाने के लिए गर्व से हमारी तारीफ की। जल्द ही हमें हर ट्रेन में कोचों की संख्या चार से बढ़कर आठ करने का निर्णय लिया। हर दिन लाखों लोगों को सुरंगों के माध्यम से मंजिल तक ले जाने की वजह से मेट्रो रेलवे कोलकाता भारत की शान भारत की पहचान बन गई। दिल्ली से बेंगलोर तक, मुम्बई से चेन्नई तक भारत भर के शहरों ने हमारी सफलता से प्रेरणा ली और अपनी खुद की मेट्रो परियोजना कार्य में जुट गए।

सरकार की मंजूरी के साथ हमने शहर के दक्षिणी किनारे में न्यू-गरिया को दमदम से जोड़ने का प्रयास किया लेकिन हमारे पास पर्याप्त रैक नहीं थे। अतः कवि सुभाष तक मेट्रो सेवाओं के उद्घाटन के दिन 7 अक्टूबर 2010 को पहली दो पूरी तरह से वातानुकूलित या एसी मेट्रो रेल को सेवा में शामिल कर लिया गया। लेकिन इसकी वजह से एसी मेट्रो में नॉन एसी मेट्रो की तुलना में बहुत ज्यादा भीड़ होने लगी। और आखिरकार वो दिन आ ही गया जब आपको एसी मेट्रो के लिए इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

मेट्रो रेलवे कोलकाता गर्व के साथ घोषणा करता है कि नॉन एसी मेट्रो सेवाओं को हमेशा के लिए बंद कर दिया गया है। हमारे पास पर्याप्त एसी मेट्रो होने के कारण नॉन एसी मेट्रो को हमेशा के लिए बंद करने का फैसला किया गया। आज के बाद उनके दरवाजे भी नहीं खुलेंगे। उनके पंखे कभी नहीं चलेंगे। नॉन एसी मेट्रो की कहानियां अब इतिहास के पन्नों में ही सिमट कर रह जाएंगी।

पूर्व में न्यू टाऊन, पश्चिम में हावड़ा मैदान, उत्तर में एयरपोर्ट, दक्षिण में जोका और आने वाले दिनों में शहर के हर कोने में हम मेट्रो सेवाएं प्रदान करेंगे।

आपके घर के पास ही किसी स्टेशन पर हम आरामदायक सेवाएं प्रदान करने का वचन देते हैं। हमारी आधुनिक सुविधाओं के साथ शहर के एक कोने से दूसरे कोने तक आप त्वरित यात्रा कर पाएंगे।

भविष्य में हम हावड़ा ब्रिज के पास भारत की पहली अंडरवाटर मेट्रो चलाएंगे। एयरपोर्ट के पास सबसे बड़ा भूमिगत मेट्रो स्टेशन और हावड़ा में देश का सबसे गहरा मेट्रो स्टेशन देश की सेवा में अर्पित करेंगे। हावड़ा से सियालदह, दक्षिणेश्वर से कालीघाट और विक्टोरिया से इको पार्क और जोका से बारासात, हम शहर की परिवहन व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव लाएंगे।

**भारत का पहला, कोलकाता का गौरव मेट्रो रेलवे कोलकाता –
हमेशा आपकी सेवा में।**

Welcome to Metro Railway!



Kolkata - the city of joy, the cultural capital of India, and a city home to millions. The city that is packed with the impressions of colonial era blended with a touch of modern amenities, is also the third most populated urban area in India.

As industries flourished, Calcutta got squeezed by its limited road space. With overflowing traffic all around, the city was starving with its lack of efficiency. That's when the Metro Railway was conceptualized. Aiming to keep the city moving, we started building India's First Ever Metro Rail!

But the idea of a metro rail is not new! As can be seen in the pioneer, the metro railway in Calcutta was conceptualized much earlier in 1921. As the situation deteriorated, the idea was revived in 1969 with the help of Metropolitan Transport Project under the Ministry of Railways. Long before the recent years of India's metro revolution, Metro Railway was formed under the Ministry of Railways to provide world-class amenities to Kolkata.

Although the aim was promising, construction of such a project was very challenging in India back then. With fund crunches and lack of technology, we faced a huge difficulty in constructing your North-South Metro. But with the help of our German, Hungarian and Russian friends, we started materializing the project to make it a reality. With no standards provides, it was never easy to build the metro on our own. It took some time extra, but we couldn't hold our excitement as the North-South Metro gradually took its shape!

With struggles and quenchers, work was completed. With the help of BHEL and NGEF, we brought indigenously developed metro trains that were manufactured in Chennai by the ICF. Thus, with the blessings of the people, the Kolkata Metro was dedicated to the service of the nation on 24th October, 1984.

37 years ago, when the first metro arrived at Esplanade and opened its automatic sliding doors, people were awestruck! In a time when India still had Steam Engines chugging around, people only heard of the London Underground but never imagined something similar. Therefore, we soon acquired the tag of 'India's First, Kolkata's Pride!'

Soon after, things became better! As we expanded from Tollygunge to Dumdum, our metro took the entire load of the city! Our indigenous technologies soon proved to be the best alternative to Trams, Buses, Taxis, and whatever that spoilt the streets of

Calcutta. Non-airconditioned and too noisy, but as our trains cruised through the tunnels, people proudly lauded us for making their lives easier!

As we started with only 4 coaches per rake, metro's immense footfall forced us to upgrade to 8 cars. Carrying lakhs of people through the tunnels every single day, Metro Railway Kolkata soon became a national symbol of success! From Delhi to Bangalore, from Mumbai to Chennai, cities across India took inspiration from our success and desperately planned their own metro projects.



With the government's sanction, we gradually went extra-miles to connect the southern fringes of New Garia. So, our ageing fleet of Non-AC trains became insufficient. Finally, with the inauguration of metro services up to Kavi Subhash, two fully Air Conditioned Metro rakes were inducted into service on 7th October 2010. As we ran our metro with the ageing Non-AC fleet, our commuters kept on skipping the trains in search of an AC Metro. Finally, the day has come when you don't have to wait for an AC Metro! Metro Railway Kolkata proudly announces that non ac metro services have been permanently discontinued. As we have enough AC metro rakes, it is time to bid a farewell to Non-AC metro. Noisy tunnels and humid commutes are gone forever! After today, their doors will never open; their lights will never glow; the fans will never noise! The tales of Non-AC Metros will be permanently transferred to the pages of history!

As we expand our services to New Town in the East, Howrah Maidan in the west, Airport in the north and Joka in the extreme south, we pledge to provide cool and comfortable services to a station near you! Future is as glorious as the past! Commute anywhere in a matter of minutes with our modern facilities! In Future, we're bringing India's first underwater metro near Howrah Bridge, the largest underground metro station at the Airport and the deepest underground metro station at Howrah. Joining Sealdah with Howrah, Kalighat with Dakshineswar, Eco Park with Victoria and Barasat with Joka, your futuristic metro will revolutionize Kolkata's Transport System!

India's First, Kolkata's Pride! Metro Railway, Kolkata — Always at your service!